**BRDU International Journal of Multidisciplinary Research**
**ISSN : 2455-278X**
**(A peer reviewed and refereed Journal)**
Vol.10, Issue.III, March 2024, Pc : BRDU-2403009

# सत्यवीर नाहड़िया के हरियाणवी लोक साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

मनीषा कुमारी, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर।

हरियाणा प्रदेश देश और दुनिया में अपनी अनूठी शहादत परम्परा एवं सैनिक इतिहास व समृद्ध सैन्य संस्कृति के रुप में ख्याति प्राप्त रहा है। यह धरा हमेशा से वीर योद्धाओं, शूरवीरों व रणबांकुरों की खान रही है। प्रत्येक युग में यहां के रणबांकुरों ने रण क्षेत्र में अपने पराक्रम का लोहा मनवाया है। यहां के वीर तिरंगे की आन बान और शान के लिए अपने प्राणों की आहुति देने में सदैव अग्रिम पंक्ति में रहे हैं। इस प्रदेश के चप्पे–चप्पे में वीरता व बलिदान की अमिट कहानियां छिपी हैं। इस प्रसविनी धरा को चिरस्थायी बनाने में हरियाणवी लोक साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकर सत्यवीर नाहड़िया का योगदान अविस्मरणीय है। इनका लेखन अत्यंत प्रभावशाली, मौलिक, सहज एवं नूतन,विषय के अनुरूप, सटीक, भूत, वर्तमान तथा भविष्य में भी प्रासंगिक है।

राष्ट्रीय चेतना का आहवान उनकी रचना 'एक बख़त था' में बखूबी चित्रित हुआ है। हरियाणवी लोक साहित्य सृजन में उनकी पैनी दृष्टि तथा रचनात्मक सृजनशीलता का समन्वय नज़र आता है।

हरियाणा वीरां की भूम्मी, संस्कार इसे पाये सैं।
इस माट्टी नै भारत खात्तर, अपणे लाल खपाये सैं।
आजादी की लड़ी लड़ाई, काम देस कै आये सैं।
हँसते–हँसते मिटते आये, जब आजादी ल्याये सैं।
रै जिननै फरज निभाये सैं, वे सबतै बड्डे दान्नी।
आओ ध्याओ–सीस नवाओ, रै याद करो कुर्बान्नी ।।

हरियाणा के गौरवशाली इतिहास को नाहड़िया जी ने युवाओं के लिए प्रेरणा बताया वहीं मां भूमि पर मिटने वाले वीरों के अमिट बलिदान को सर्वोपरि बताया। 'नाहड़िया की कुंडलियाँ' नामक कृति में यह चित्रण जीवंत हो उठता है।

हरियाणा वो देस सै, न्यारा जिसका नीर।
देस–धरम पै मर मिटैं, हरियाणे के वीर।
हरियाणे के वीर, तीर वै छोड्डैं न्यारे।
खड़े सीम पै त्यार, मिलैं वै फौज्जी म्हारे।
नाहड़िया कबिराय, मात का फरज पुगाणा।
घुट्टी म्हं ले सीख, फरज़ जाणै हरियाणा ।।

वीर भूमि हरियाणा के वीरों के अमिट बलिदान व देश पर मर–मिटने की शहादत का वर्णन आने वाली पीढ़ीयों को प्रेरणा देता रहेगा।

हरियाणा के गाभरू, देत्ते आये ज्यान।
भारत माँ के वासते, हँस कै हों कुरबान।
हँस कै हों कुरबान, स्यान तै मर मिट ज्यावैं।
हरियाणा के वीर, सदा न्यूं धरम निभावैं।
नाहड़िया कबिराय, देस का गावैं गाणा।
लिखै नया इतिहास, सदा न्यू यो हरियाणा ।।

राष्ट्रहित सर्वोपरि है, इस कथन को चरितार्थ करने में हरियाणा के रणबांकुरों का बलिदान अमिट है। चाहे कारगिल की दुर्गम चोटी का युद्ध हो या रेजांगला रणक्षेत्र हरियाणा के वीरों का मां भूमि पर शहादत देने का बलिदान अविस्मरणीय है।

रहै तिरंगा तो सदा, भारत–माँ की आन।
लहरावै असमान म्हं, बढ़ता रह सम्मान।
बढ़ता रह सम्मान, आन हम सदा निभावां।
जित्तै जगत तमाम, तान या सदा बजावां।
तीन रंग तै हिंद, रहै यो हरदम चंगा।
आन–बान अर स्यान, हिंद की रहै तिरंगा ।।

राष्ट्रीय एकता से ओत–प्रोत राष्ट्रीय ध्वज़ तिरंगे की शान को सर्वोपरि बताया जो युवाओं के लिए सदैव 'राष्ट्रहित सर्वोपरि है' के भाव को जगाता रहेगा।

सदा तिरंगा आन हो, भारत–माँ का मान।
तीन रंग म्हं दीखता, पूरा हिंदुस्तान।
पूरा हिंदुस्तान, याद बलिदान दिवावै।
हरे–भरे की अलख, त्याग के भाव जगावै।
फरज निभावां रोज, देस जब रहगा चंगा।
तन–मन म्हं जयहिंद, ज्यान हो सदा तिरंगा ।।

अपनी अनूठी लोक संस्कृति एवं स्वर्णिम सैन्य संस्कृति को समेटे हरियाणा प्रदेश की देश व दुनिया में अलग पहचान रही है। हरियाणा प्रदेश की इस समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को 'हरियाणा के रंग' नामक कृति में नाहड़िया ने इस प्रकार चित्रित किया है –

सत्तावन म्हं था लड़ा, हरियाणा यो खास।
जिस तै जाग्यी थी नयी, आजादी की आस।
आजादी की आस, कूद ग्या था इत जन–जन।
हरियाणा म्हं याद, रहैगा न्यूँ सत्तावन ।।

आजाद हिन्द फौज के नायक व सैनिकों के अमिट बलिदान की गाथा को लोकमन की गहराई में उतारने का प्रयास किया है जो चिरस्थाई रहेगा तथा आने वाली पीढ़ीयों के लिए देश पर कुर्बानी देने वाले वीरों के बलिदान को अमिट बनाने में नाहड़िया जी का योगदान अतुलनीय है।

सेनानी म्हारे लड़े, नेत्ता जी कै गैल।
फौज हिंद आजाद थी, गोरे होग्ये फैल।
गोरे होग्ये फैल, छोड़ ग्ये खास निसानी।
खूब दिया बलिदान, खपे म्हारे सेनानी ।।

हरियाणा प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि के बहुआयामी चित्रों को सत्यवीर नाहड़िया ने इस प्रकार चित्रित किया है कि वह लोक मन को छू लेने वाली मार्मिक व चिरस्थाई पूंजी बन गई है। आज़ादी की जंग में वीरों के बलिदान को अमर बनाने में उन्होंने हरियाणवी बोली में पिरो कर जन जन तक पहुंचाया है।

सुणकै फांस्सी–आयी हांस्सी, जमा नहीं घबराया।
माँ के नारे–ला जयकारे, वंदे–माँ फेर गाया।
ठाकै माट्टी–मात्थै चाट्टी, माँ तै सीस नवाया।
वो धीर वीर–घणा गंभीर, फेर खूब मुसकाया।
इंकलाब कह न्यूं फरमाया, सै यो फंदा मान मेरा।
जुग जुग जग यो याद करैगा, भगतसिंह बलिदान तेरा ।।

नाहड़िया की रचनाओं की प्रासंगिकता वर्तमान व भविष्य में बनी रहेगी तथा आने वाली पीढ़ियों को हरियाणवी लोक संस्कृति, शहादत परम्परा व सैन्य इतिहास से रुबरु करवाती रहेगी और उनका मार्गदर्शन करती रहेगी।

संदर्भ सूची –

1. एक बखत था, सत्यवीर नाहड़िया, पृष्ठ–76
2. नाहड़िया की कुंडलियाँ, सत्यवीर नाहड़िया, पृष्ठ–50
3. नाहड़िया की कुंडलियाँ, सत्यवीर नाहड़िया, पृष्ठ–39
4. चाकी आला चून, सत्यवीर नाहड़िया, पृष्ठ–71
5. हरियाणा के रंग, सत्यवीर नाहड़िया, पृष्ठ–20
6. हरियाणा के रंग, सत्यवीर नाहड़िया, पृष्ठ–21
7. एक बख़त था, सत्यवीर नाहड़िया, पृष्ठ–51